ललित नरायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वर नगर, दरभंगा–846004

के अन्तर्गत

पी–एच0 डी0 की उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारुप की रुपरेखा

सामाजिक विज्ञान संकाय (राजनीति विज्ञान)

शोध शीर्षक

जननायक कर्पूरी ठाकुर के सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

<u>शोध निर्देशक</u>

डॉ0 मनोज कुमार

सहायक प्राध्यापक

विश्वविद्यालय, राजनीति विज्ञान विभाग

ललित नाराण मिथिला विश्वविद्यालय,

कामेश्वर नगर, दरभंगा– 846004

<u>शोधार्थी</u>

शालिनी कुमारी

विश्वविद्यालय, राजनीति विज्ञान विभाग

रोल नं0– **E 2216022**

PAT : 2021–2022

ललित नाराण मिथिला विश्वविद्यालय,

कामेश्वर नगर, दरभंगा– 846004

शोध प्रस्ताव का शीर्षक–

जननायक कर्पूरी ठाकुर के सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोध समस्या–

2024 ई0 के आम चुनाव से पहले कर्पूरी ठाकुर उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य के साथ ही साथ समूचे देश में चर्चा के केन्द्र बिन्दु हो गये हैं।

- ऐसे में यह प्रश्न अवश्य उत्पन्न हो जाता है कि भारत जैसे लोकतांत्रिक व्यवस्था में समाज के पिछड़े वर्ग से ताल्लुक रखने वाले कर्पूरी ठाकुर के अचानक प्रासंगिक होने के क्या कारण हो सकते हैं ? क्यों विभिन्न राजनीतिक दलों के द्वारा उन्हें अपने दल के आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है ?
- क्यों वर्तमान में बिहार के सक्रिय राजनीतिज्ञों के द्वारा उनके व्यक्तित्व का उदाहरण प्रस्तुत करके अपने राजनीति को बढ़ाने का प्रयास हो रहा है ?
- उपरोक्त विभिन्न प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न कर्पूरी ठाकुर के संदर्भ में उत्पन्न होता है जैसे– उनके कार्यक्रम एवं

18.4.24

Shalini Kumari
18/04/2024

नीतियाँ कैसी थीं ? उनके विचार किन–किन लोगों के विचारों से प्रभावित थीं ?

- क्यों सर्व समाज में उन्हें स्वीकारा गया इन प्रश्नों के कारणों को जानने की जिज्ञासा एक व्यवस्थित शोध के सम्भव नहीं हो सकती।

शोध का परिचय–

इनका जन्म पिछड़ा वर्ग में हुआ था जिसे इस समय बड़ा वोट बैंक माना जाता है। उनके किन विचारों के आधार पर सामाजिक न्याय का मसीहा माना जाता है? जिनके अनुसरण का दावा कई दल और नेता करते हैं। पूरे देश में बिहार राज्य ही ऐसा पहला राज्य है जिसने कर्पूरी ठाकुर के नेतृत्व में सर्वप्रथम आर्थिक आधार पर सवर्णों को तीन फीसदी आरक्षण दिया था, जिसे बाद में कोर्ट ने समाप्त कर दिया था।

बिहार में जातीय जनगणना के पश्चात् सम्भवतः कर्पूरी ठाकुर के संदर्भ में बिहार राज्य के साथ ही सम्पूर्ण भारत में चर्चा के विषय बन गये। इसके पीछे जो भी कारण रहा हो, लेकिन इनके सामाजिक एवं राजनीतिक मूल्यों तथा आदर्शों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

भारतीय संविधान का सर्वोच्च लक्ष्य है समाज में पूर्ण न्याय की स्थापना करना ताकि एक वर्ग के द्वारा दूसरे वर्ग का शोषण न किया जाए। अर्थात् राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से भारतीय समाज

18.4.24

Shalini Kumari
18/04/2024

में न्याय की स्थापना भारतीय संविधान का उद्देश्य है जिसका उल्लेख प्रस्तावना में स्पष्ट रूप से किया गया है।

राजनीतिक न्याय का उद्देश्य है कि भारत के प्रत्येक नागरिक को बिना किसी भेदभाव के समान रूप से राजनैतिक अधिकार प्राप्त हो तथा उन अधिकारों जैसे– वयस्क मतदान, चुनाव में उम्मीदवार बनना आदि का निर्भय होकर उपयोग कर सके।

सामाजिक न्याय का लक्ष्य है कि समाज में ऊँच–नीच, जाति बन्धन आदि के विरुद्ध लोगों को संघर्ष करने एवं स्वयं को प्रतिष्ठित करने का अवसर प्राप्त हो ताकि उनका सामाजिक शोषण न हो सके।

दूसरे शब्दों में सामाजिक न्याय का लक्ष्य एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जिससे गरीब से गरीब भी यह समझे कि यह उसका देश है और इसके निर्माण में उसका भी हाथ है।

आर्थिक न्याय का उद्देश्य है शोषण को रोकना। इसके लिए समुदाय की भौतिक सम्पति का स्वामित्व और नियंत्रण इस प्रकार हो कि अधिक से अधिक सार्वजनिक हित सम्भव हो सके। लेकिन यह लक्ष्य जाति, धर्म, लिंग आदि के भेदभाव को समाप्त तथा सभी व्यक्तियों को अपना व्यवसाय चुनने, कार्य करने एवं अपनी उन्नति का समान अवसर दिये सम्भव नहीं हो सकता है। भारतीय संविधान को लागू करने के पश्चात् कई दशक बाद भी भारतीय समाज में एक वर्ग ऐसा था जो अपने राजनीतिक एवं सामाजिक अधिकारों का उपयोग नहीं कर पाते थे, इन्हें अपने वोट का

M Kumar
18.4.24

Shalini Kumari
18/04/2024

कीमत ही नहीं मालूम था। बिहार में इनके मतों का दुरुपयोग किया जाता था। ऐसे ही समय में कर्पूरी ठाकुर के नेतृत्व में बिहार की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति में बदलाव दिखाई देने लगता है।

इस बात को बिल्कुल नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता कि किसी भी व्यक्ति के चिन्तन पर समय एवं परिस्थितियों का बहुत अधिक प्रभाव रहता है। बिहार एवं देश की राजनीति में कर्पूरी ठाकुर के सक्रिय राजनीति में समय और परिस्थितियों का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा था। ऐसे समय में कर्पूरी ठाकुर भी समाज में व्याप्त जाति पर आधारित समाज को बदलकर स्वतंत्रता, समानता एवं बन्धुत्व पर आधारित समाज का निर्माण करना चाहते थे।

इसीलिए कर्पूरी ठाकुर को गरीबों एवं शोषित वर्गों के नायक के रूप में जाना जाता है। कर्पूरी ठाकुर की कर्कश आवाज हमेशा जुल्म एवं ज्यादती पर उठती थी। उनका मानना था कि जो भी काम करो, उसमें किसी प्रकार का दिखावा नहीं होना चाहिए। एक गरीब परिवार से निकलकर राजनीति के ऊँचे शिखर पर पहुँचे ठाकुर जब तक जीवित रहे, बिहार में रहने वाले अभिजात वर्ग के हों या पिछड़े समाज के सभी लोग उनके मुरीद रहे। अथवा दूसरे शब्दों में कहें तो समाज के सभी वर्गों में उनकी स्वीकार्यता थी। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन में जिन मूल्यों और सिद्धांतों को महत्व दिया और कहीं नहीं मिलती।

18.4.24

Shalini Kumari
18/04/2024

सामान्य, सरल और सहज जीवन शैली के हिमायती कर्पूरी ठाकुर को प्रारम्भ से ही सामाजिक एवं राजनीतिक अंतर्विरोधों से जूझना पड़ा। ये अन्तर्बिरोध अनोखे थे और विघटनकारी भी क्योंकि आजादी मिलने के साथ ही सत्ता पर कांग्रेस काबिज हो गई। बिहार में कांग्रेस पर ऊँची जातियों का कब्जा था। ये ऊँची जातियाँ सत्ता का अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए आपस में लड़ने लगीं, पार्टी के बजाए इन जातियों के नाम पर वोट बैंक बनाने लगे। सन् 1952 के प्रथम आम चुनाव के बाद कांग्रेस के अन्दर कुछ संख्या बहुल पिछड़ी जातियों ने भी अलग से एक गुट बना लिया, जिसका नाम रखा गया 'त्रिवेणी संघ'। अब यह संघ भी उस प्रक्रिया में सम्मिलित हो गया। शीघ्र ही इसके नकारात्मक परिणाम सामने आने लगे। संख्याबल, बाहुबल और धनबल की ताकतें राजनीति और समाज को नियंत्रित करने लगी। राजनीतिक दलों का स्वरूप बदलने लगा। निष्ठावान कार्यकर्ता औंधे मुँह गिरने लगे।

कर्पूरी ठाकुर ने न केवल इस परिस्थिति का डटकर सामना किया, बल्कि इन प्रवृत्तियों का जमकर विरोध किया। देश भर में कांग्रेस के अंदर और भी विभिन्न प्रकार के नकारात्मक तत्व विकसित हो चुके थे, इसलिए उसे सत्ता से हटाने के लिए सन् 1967 ई0 के आम चुनाव में डॉ0 राम मनोहर लोहिया के नेतृत्व में गैर कांग्रेसवाद का नारा दिया गया। कांग्रेस पराजित हुई और बिहार में पहली बार गैर कांग्रेसी सरकार बनी। सत्ता में आम लोगों और पिछड़ी जातियों की भागीदारी बढ़ी। कर्पूरी ठाकुर उस

M. Kumar 18.4.24

Shalini Kumari 18/04/2024

ऊँचाई मिली जब वे 1977 ई0 में जनता पार्टी की चुनाव में जीत के बाद बिहार राज्य के मुख्यमंत्री बने।

सन् 1977 ई0 के चुनाव में पहली बार राजनीतिक सत्ता पर पिछड़ा वर्ग को निर्णायक बढ़त हासिल हुई थी। लेकिन प्रशासन तंत्र पर उनका नियंत्रण नहीं था। इसलिए सरकारी नौकरियों में आरक्षण की मांग जोर–शोर से की जाने लगी। कर्पूरी ठाकुर ने मुख्यमंत्री की हैसियत से उक्त माँग को संविधान सम्मत मानकर एक फार्मूला निर्धारित किया और काफी विचार–विमर्श के बाद उसे लागू भी कर दिया। इस पर पक्ष एवं विपक्ष में प्रतिक्रिया हुई। अलग–अलग समूहों ने एक–दूसरे पर जातिवादी होने के आरोप भी लगाए, लेकिन कर्पूरी ठाकुर के विचारों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। बल्कि अपनी नीति और नियत की वजह से वे सर्व समाज के नेता बन गए।

शोध उद्देश्य–

- कर्पूरी ठाकुर के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
- कर्पूरी ठाकुर के कार्यक्रमों एवं नीतियों का अध्ययन करना।
- बिहार राज्य के पिछड़े वर्गों एवं गरीब सवर्णों के राजनैतिक सहभागिता बढ़ाने में कर्पूरी ठाकुर की भूमिका का अध्ययन करना।

18.4.24

Shalini Kumari
18/04/2024

- राज्य के पिछड़े वर्गों में राजनैतिक चेतना एवं आकांक्षा के विकास में कर्पूरी ठाकुर के भूमिका का अध्ययन करना।
- बिहार के राजनीतिक परिवर्तन में इनके योगदान का अध्ययन करना।
- **शोध परिकल्पना :–**
- कर्पूरी ठाकुर ने बिहार राज्य के पिछड़े वर्गों में राजनीतिक चेतना उत्पन्न की जिससे इन वर्गों में नेतृत्व की आकांक्षा बढ़ी।
- कर्पूरी ठाकुर ने अपने नेतृत्व में बिहार के राजनीति को एक नई दिशा दी।
- कर्पूरी ठाकुर का समाज के सभी वर्गों में स्वीकार्यता थी।
- कर्पूरी ठाकुर ने समाज के निम्न वर्गों को जिम्मेदारी दी जिससे इन वर्गों में राजनीतिक आकांक्षा बढ़ी।

साहित्य समीक्षा

प्रस्तुत साहित्य समीक्षा का उद्देश्य जननायक कर्पूरी ठाकुर के सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन का विश्लेषणात्मक अध्ययन से संबंधित शोध को प्रामाणिक और स्पष्ट रूप देना है। संबंधित विषय से सरोकार करने वाले अनेक सूत्र उपलब्ध चीन में शोध विषय से संबंधित जानकारी मिलती है।

M. Kumar
18.4.24

Shalini Kumari
18/04/2024

- ममता मेहरोत्रा, समाजवाद के जननायक कर्पूरी ठाकुर, प्रभात प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 15 जनवरी 2024, बिहार की राजनीतिक इतिहास में कुछ हस्तियां न केवल नेताओं के रूप में बल्कि परिवर्तनकारी ताकतों के रूप में सामने आती है जिन्होंने राज्य की नियति को आकार देने का कार्य किया है। जननायक कर्पूरी ठाकुर की जीवन, उनकी राजनीतिक यात्रा तथा बिहार और उसके बाहर की सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य पर उनके द्वारा छोड़े गए अमिट प्रभाव को उजागर करने का कार्य करती है।
- डॉ0 कुमार संतोष, जानकी प्रकाशन, अशोक राजपथ, चौहत्ता, पटना, बिहार समाजवादी आंदोलन की क्रीड़ास्थली रहा है। गौतम बुद्ध तथा वर्तमान महावीर की समय से ही बिहार ने भारत में समता मूलक समाज की स्थापना की दिशा में अन्यतम प्रयास किया है। आधुनिक काल में भी राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान समाजवादी विचारधारा ने काफी जोर पकड़ा। इस पुस्तक में लेखक ने बिहार के प्रमुख समाजवादी नेताओं के जीवन एवं योगदान को अपने अध्ययन का विषय बनाया है।
- एम0एन0 श्रीनिवास, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1967, इस पुस्तक में संस्कृतिकरण और पश्चिमीकरण के माध्यम से भारतीय समाज में हुए परिवर्तनों को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है, लेकिन समाज में सभी

N. Kumar
18.4.24

Shalini Kumari
18/04/2024

वर्गों के जीवन में राजनीतिक एवं इन्हें नेतृत्व देने से समाज में जो परिवर्तन हो सकता है ऐसी सामग्री का अभाव पाया गया है।

- रामशरण शर्मा कृत, प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार और संस्थाएं, 1992, इस पुस्तक में प्राचीन भारत की राजनीतिक विचारधाराओं, संस्थाओं के साम्राज्यवादी और राष्ट्रवादी स्वरूप का सर्वेक्षण किया गया है।

अध्ययन स्रोत–

अध्ययन के स्रोत के रूप में द्वितीयक स्रोत का प्रयोग किया जायेगा। द्वितीय स्रोत में जैसे– पुस्तकों, पत्र–पत्रिका, लेखों, समाचार पत्रों व वेबसाइड इत्यादि सामग्री का प्रयोग किया जायेगा। कर्पूरी ठाकुर से सम्बन्धित तथा सामाजिक न्याय से सम्बन्धित प्रचुर अध्ययन सामग्री के माध्यम से साहित्य समीक्षा की जायेगी।

प्रस्तावित अध्यायीकरण–

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को व्यवस्थित, सार्थक एवं सूचनापरक बनाने के लिए सम्पूर्ण शोध प्रबंध को पाँच भागों में बाँटा गया है–

प्रस्तावना

अध्याय I. कर्पूरी ठाकुर के विचारों का सैद्धान्तिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अध्याय II. कर्पूरी ठाकुर की विचारधारा एवं कार्यक्रम

M. Kumar 18.4.24

Shalini Kumari
18/04/2024

अध्याय III. कर्पूरी ठाकुर के सामाजिक न्याय की अवधारणा

अध्याय IV. कर्पूरी ठाकुर के राजनीतिक नेतृत्व का प्रभाव

अध्याय V. निष्कर्ष एवं सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची–

- झा, विकास कुमार, सत्ता के सूत्रधार, सृष्टि प्रकाशन, दक्षिण गाँधी मैदान, पटना, 1994
- खन्ना, सुमन, भारतीय सामाजिक संस्थाएँ, वाराणसी प्रकाशन मंदिर, जगतपुर, वाराणसी, 1994
- शर्मा, रामविलास, आज का भारत, श्याम बिहारी राय द्वारा ग्रंथ शिल्पी (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड, जी–82, विजय चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली, 2000
- शर्मा, हरीश चन्द्र, भारत में राज्यों की राजनीति, कालेज बुक डिपो, जयपुर, 1979
- शर्मा, रामशरण, प्रचीन भारत का आर्थिक और सामाजिक इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1997

18.4.24

Shalini Kumari
18/04/2024

- रजनी कोठारी, भारत में राजनीति कल और आज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
- सिंह, डॉ0 भीम, महान कर्मयोगी जननायक कर्पूरी ठाकुर, प्रभाव प्रकाशन
- कर्पूरी कुंज, सप्तक्रांति के संवाहक जननायक कर्पूरी ठाकुर, स्मृति ग्रंथ
- मिश्रा, अमिताभ कुमार, भारत में गैर कांग्रेसी सरकारें, उत्तर प्रदेश के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन, मानक पब्लिकेशन प्रा0लि0, सरस्वती कॉम्प्लेक्स, सुभाष चौक लक्ष्मी नगर, दिल्ली, 2005
- खंडेला, यान चन्द, भारतीय राजनीति का बदलता परिदृश्य, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2005
- श्री निवास, एम0एन0 : आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0, नयी दिल्ली, 1967
- उमाशंकर चौधरी कृत, हिस्सेदारी के प्रश्न प्रति प्रश्न, अनामिका पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2012
- घनश्याम लिखित भारत में सामाजिक आंदोलन, संबंधित साहित्य का एक समीक्षा, सेज पब्लिकेशंस इंडिया, 2009

18.4.24

Shalini Kumari
18/04/2024

Article-

- सहज जीवन शैली के पुरोधा कर्पूरी ठाकुर, सहारा समय, जनवरी 24, 2013
- कर्पूरी ठाकुर लाचार थे, अपने ही मंत्रियों के समक्ष, 1 फरवरी, 2009
- Chandra Kanchan, Why Ethic Parties Succeed : Patronage and Ethnic Head Count in India, Cambridge University Press, Cambridge, 2004

समाचार पत्रिका–

- दैनिक जागरण
- अमर उजाला
- हिन्दुस्तान

Webesite-

- https://www.ceobihar.nic.in
- https://www.eci.gov.in
- https://www.wikipedia.org

20.04.2024

20.04.24
Head
University Department of Political Science
Lalit Naray ... Darbhanga

20.4.24

Dr Manoj Kumar
Assista Professor
Univ. Dept. of Pol.Sc.
L.M.N.U. Darbh...
18.4.24

Shalini Kumari
18/04/2024